

# दीप त्रिवेदी

बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' के लेखक द्वारा लिखित

# मैं कृष्ण हूँ

कृष्ण की आत्मकथा

3

द्वारका – सपनों से हकीकत का सफर

अनुक्रमणिका

# मैं कृष्ण हूँ

भाग-3

कृष्ण की आत्मकथा

द्वारका – सपनों से हकीकत का सफर

- नं. प्रस्तावना
1. [लेखक का परिचय](#)
2. [मशहूर वक्ता](#)
3. [लेखक की कलम से...](#)
4. [कृष्ण पर रिसर्च की पूरी दास्तां](#)
5. [कहानी अबतक...](#)

## नं. विषय

- अध्याय - १ : [स्यमंतक मणि की चोरी का राज](#)  
अध्याय - २ : [द्वारका का निर्माण](#)  
अध्याय - ३ : [द्वारका के लिए प्रस्थान](#)  
अध्याय - ४ : [मेरा द्वारकाधीश बनना](#)  
अध्याय - ५ : [रुक्मिणी-हरण](#)  
अध्याय - ६ : [द्वारका का प्रारम्भिक जीवन](#)  
अध्याय - ७ : [पांडवों का राज्याभिषेक](#)  
अध्याय - ८ : [अपूर्व सुन्दरी द्रौपदी से मुलाकात](#)  
अध्याय - ९ : [मेरा नागकन्या से विवाह](#)  
अध्याय - १० : [सत्राजित का यह कैसा प्रतिशोध](#)  
अध्याय - ११ : [द्वारका का व्यवसाय फैलाना](#)

## लेखक का परिचय

दीप त्रिवेदी एक प्रसिद्ध लेखक, वक्ता और स्पीरिच्युअल सायको-डाइनेमिक्स के पायनियर हैं जो एक व्यापक दृष्टिकोण से ना सिर्फ लिखते हैं, बल्कि विभिन्न विषयों पर लेक्चर्स और वर्कशॉप्स भी कंडक्ट करते हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्हें पढ़ने व सुनने-मात्र से मनुष्य में आमूल सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है। वे अपने कार्यों द्वारा आजतक हजारों लोगों को सुख और सफलता के मार्ग पर लगा चुके हैं।

दीप त्रिवेदी ने अपने इन कार्यों द्वारा प्रकृति, उसके नियम, उसका आचरण, उसकी सायकोलॉजी और उसके मनुष्यजीवन पर पड़नेवाले प्रभाव को बड़ी ही गहराई से समझाया है। जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे उन्होंने न छूआ हो। वे कहते हैं कि सायकोलॉजी के बाबत कम ज्ञान और कम समझ होना ही मनुष्यजीवन के तमाम दुःखों और असफलताओं का मूल कारण है।

वे बेस्टसेलर्स 'मैं मन हूँ' और 'मैं कृष्ण हूँ' समेत कई अन्य किताबें लिख चुके हैं। उनके द्वारा लिखी गई बेस्टसेलिंग किताब, 'मैं मन हूँ' कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी है और 'मैं कृष्ण हूँ' को साल 2018 के Crossword Book Awards के 'Best Popular Non-Fiction' कैटेगरी के लिए नामांकित भी किया गया है। समाज में उनके असीमित योगदान के लिए दीप त्रिवेदी को साल 2018 के Times Power Men Award से सम्मानित किया गया है।

मनुष्यजीवन की गहरे-से-गहरी सायकोलॉजी पर उनकी पकड़ का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मनुष्यजीवन पर सर्वाधिक लेक्चर्स और 'भगवद्गीता' पर सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड उन्हीं के नाम पर है जिसमें उन्होंने 58 दिनों में गीता पर 168 घंटे, 28 मिनट और 50 सेकंड तक एक लंबी चर्चा करी है। इसके अलावा अष्टावक्र गीता और ताओ-ते-चिंग पर भी सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड उन्हीं के नाम पर दर्ज है। ये सारे रेकॉर्ड्स राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रेकॉर्ड बुक्स में दर्ज है। साथ ही मनुष्य के जीवन, सायकोलॉजी, आत्मा, प्रकृति के नियम, भाग्य तथा अन्य विषयों पर सर्वाधिक (लगभग 12038) कोटेशन लिखने का रेकॉर्ड भी उन्हीं के नाम दर्ज है। भगवद्गीता पर उन्हें उनके सायकोलॉजिकल कार्यों के लिए ऑनरेरी डॉक्टरेट की उपाधि भी प्रदान की गई है। उनके द्वारा लोगों के रोजमर्रा के जीवन की समस्याओं पर करी गई इंटरैक्टिव वर्कशॉप्स ने सभी के जीवन में क्रांतिकारी ट्रांसफॉर्मेशन लाया है। ये तमाम लेक्चर्स और वर्कशॉप्स भारत में लाइव ऑडियन्स के सामने दिये गए हैं।

दीप त्रिवेदी की खास बात यह है कि वे जीवन के गहरे-से-गहरे पहलुओं को छूते हैं और उन्हें सरलतम भाषा में लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं जिससे कन्फ्यूजन की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं बचती है। वे अपने किताब, लेक्चर्स और वर्कशॉप्स में जिस अनोखी स्पीरिच्युअल-सायकोलॉजिकल भाषा और एक्सप्लेन का इस्तेमाल करते हैं उससे उन्हें पढ़ने तथा सुनने वालों में उसका तात्कालिक प्रभाव भी होने लगता है और यही बात उन्हें इस क्षेत्र का पायनियर बनाती है।

-----

## दीप त्रिवेदी - मशहूर वक्ता

दीप त्रिवेदी सायको-स्पीरिच्युअल कॉन्टेंट, आवाज, भाषा और एक्सप्रेशन का ऐसा मिश्रण प्रस्तुत करते हैं जिससे उन्हें देखने और सुनने वालों में तत्काल परिवर्तन आता है। सैकड़ों लोग सिर्फ उन्हें सुनने-मात्र से परिवर्तित हो चुके हैं। इसी वजह से उन्हें स्पीरिच्युअल सायको-डाइनैमिक्स का पायनियर भी कहा जाता है।

दीप त्रिवेदी जीवन से जुड़े हर विषय पर प्रकाश डालते हैं। उनके द्वारा लोगों के रोजमर्रा के जीवन की समस्याओं पर करी गई इंटरैक्टिव वर्कशॉप्स ने सभी के जीवन में क्रांतिकारी ट्रांसफॉर्मेशन लाया है। जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे उन्होंने न छूआ हो। वे विभिन्न विषयों पर बोल चुके हैं जैसे भगवद्गीता, ताओ-ते-चिंग, अष्टावक्र गीता, कुदरत के रहस्य, मन के रहस्य, आत्मा के रहस्य, भाग्य के रहस्य, इत्यादि, और:

- प्रकृति के नियम
- टाइम एण्ड स्पेस
- धर्म
- डीएनए-जीन्स
- जीवन की राह
- डे-स्लीप
- मन और बुद्धि
- व्यक्तित्व
- हीनता
- डर
- गिल्ट
- इन्वोल्वमेंट
- पक्षपात
- अपेक्षा
- स्वीकार्यशक्ति
- नेचरल इंटेलिजेंस
- ट्रांसफॉर्मेशन
- विवाह
- स्वतंत्रता
- भविष्य
- हिपोक्रेसी
- क्रिएटिविटी
- कोन्सन्ट्रेशन
- सुख और सफलता
- समृद्धि
- अच्छा-बुरा
- भगवान
- अहंकार

- क्रोध
- सेल्फ-कॉन्फिडेंस
- प्रेम
- कन्फ्यूजन

## लेखक की कलम से...

'कृष्ण' एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसके बारे में हरकोई जानना और समझना चाहता है। लेकिन उन्हें पूरा-का-पूरा शायद ही किसी ने कभी जाना या समझा हो। जो शायद कभी किसी की समझ में नहीं आया। इतनी तो उनके व्यक्तित्व की भिन्नताएं थीं कि वे पूरे-के-पूरे कभी किसी की पकड़ में नहीं आए। फिर भी जितना प्यार कृष्ण को मिला और जिस कदर लोगों ने उन्हें दिलों में बिठाया, वह अपने-आप में एक मिसाल है। उनके व्यक्तित्व का कमाल तो यह कि कोई उन्हें प्रेमी मानता है तो कोई ध्यानी, कोई योगी मानता है तो कोई कर्मवीर। और मजा यह कि जो उनके जिस रूप को जानता या मानता है, वह उनके उस रूप का दीवाना हो जाता है। हालांकि चारों ओर हरकोई उनका दीवाना ही है, ऐसा भी नहीं है। उनके व्यक्तित्व का विरोधाभासी प्रभाव यह भी है कि जहां हिन्दू धर्म के कुछ ज्ञानियों ने उन्हें एकमात्र "पूर्ण-अवतार" माना, वहीं जैन शास्त्रकारों ने अपनी ही समझ, अपनी ही वजहों और अपने ही कारणों से उन्हें नरक में स्थान दिया। लेकिन कृष्ण का व्यक्तित्व इनमें से किसी की भी सोच का मोहताज कहां?

अब उनका व्यक्तित्व भले ही किसी अन्य की किसी सोच का मोहताज नहीं, परंतु उनका वास्तविक व्यक्तित्व समझना तो है ही। उनका जीवन जानना तो है ही। हमें यह तो जानना ही है कि कारागृह में पैदा होने व मौत के साए में पलने के बाद भी कैसे उन्होंने द्वारकाधीश की ऊंचाई पाई? यह जानना भी रोचक है ही कि राधा और उनका प्यार क्या था? क्यों राधा को उन्होंने छोड़ा? क्यों राधा जीवनभर उनकी याद में वृज की गलियों में बावरी घूमती रही? यह तो समझना ही पड़ेगा कि यह व्यक्ति क्या है जिनपर एकतरफ महाभारत जैसा विनाशकारी युद्ध कराने का इल्जाम है, और वहीं दूसरी तरफ जिन्हें भगवद्गीता जैसा सर्वश्रेष्ठ ज्ञान देनेवाले का गुमान भी उपलब्ध है। कृष्ण ऐसा तो कैसा विरोधाभासी व्यक्तित्व है कि जिन्हें चोर, कपटी, झूठा और छलिया कहनेवालों की भी जीवनभर कभी कोई कमी नहीं रही, तो वहीं उनके जीवन में वासुदेव, मधुसूदन, कान्हा, परमात्मा व ज्ञानी कहनेवालों की भी कभी कोई अछत नहीं रही। यही क्यों, कृष्ण ने कितने विवाह किए, उनकी कितनी संतानें थी, यह यादवस्थली क्या है, जैसे अनेक सवाल भी उनके बाबत जानने की जिज्ञासा जगाते ही हैं।

परंतु जिज्ञासा जागने के बावजूद उनके जीवन बाबत जानते कितने लोग हैं? कृष्ण के जीवन बाबत तमाम सवालों के उत्तर उपलब्ध कहां है? सो यह वर्तमान पुस्तक मैंने इसी उद्देश्य से लिखी है ताकि उनके जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं से सबको अवगत करवा सकूं। इस हेतु मैंने कृष्ण के बाबत उपलब्ध तमाम पौराणिक ग्रंथों जैसे हरिवंश पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण, कूर्म पुराण, भविष्य पुराण, महाभारत व अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया और तत्पश्चात उनमें उल्लिखित तमाम संवादों और कथा-प्रसंगों के व्यावहारिक तथा मनोवैज्ञानिक पहलू को समझने के बाद ही यह पुस्तक लिखी है। इसमें मैंने ना सिर्फ कृष्ण के 108 वर्ष के सम्पूर्ण जीवन तथा उसकी तमाम महत्वपूर्ण घटनाओं को समेटा है, बल्कि साथ ही इसमें मैंने कृष्ण के व्यक्तित्व को उनकी वास्तविक सायकोलॉजी के अधिकतम निकट रखने की कोशिश भी करी है। साथ ही उनकी जीवन-यात्रा को रोचकता प्रदान करने हेतु इसे मैंने एक कहानी का स्वरूप दिया है। और कहने की जरूरत नहीं कि जब कहानी है तो कई किस्सों को साहित्यिक जरूरत के मद्देनजर यथासाध्य विस्तार भी देना पड़ा है।

दरअसल मैं एक सायकोलॉजिस्ट हूँ। और एक सायकोलॉजिस्ट की निगाह से समझें तो व्यक्ति हो, उसका जीवन हो या उसके जीवन में घटनेवाली कोई भी व कैसी भी घटना हो, अंत में तो सबकुछ एक सायकोलॉजिकल शृंखला का ही अंग है। और कृष्ण का व्यक्तित्व भी अपनी तमाम